

७७ आशं सोविधि

पञ्च गव्यं सोधनविधि

अलं शौर्यनोविधि

ASHA ARCHIVES 3481

3481

ॐ नमः शिवाय ॥ अथ नाना
प्रतिष्ठा ॥ नानावर्णाद्याय न नाना
दव्यप्रतिष्ठा ॥ गणजागादिमाह
शास्त्रे कावयत् ॥ या नमो नानादि
नित्यकर्म कथोत् ॥ नमस्त्यदि
शास्त्रे ॥ आचार्यसिद्धि ॥ सूर्या
र्घ्ये ॥ पादार्घ्ये ॥ पुस्तकार्घ्यं गुर्व
नमस्तर्वा ॥ ॐ अखण्डमण्डलाका
रस्यादि ॥ नमो नमः ॥ ॐ कोट्यद
याय नमः ॥ ॐ शिवसंस्तुता ॥
ॐ कृष्णाय नमः ॥ ॐ कृष्ण
वर्णाय नमः ॥ ॐ कोट्यद
याय नमः ॥ ॐ अखण्डमण्डलाका
रस्यादि ॥ अथ यागपूजा ॥ हस्त
पुष्पाणि पूजनी ॥ मण्डपमन्त्र ॥
शृगवलिदद्यात् ॥ बहुस्नानं मृ
त्तिका ॥ ॐ हस्तवलिनिरीकृतं ॥
कृतं स्नानं ॥ ॥ यैव नमस्तु
ते ॥ पूर्वदक्षिण ॐ कृष्णाय नमः
यनमः ॥ ॐ दक्षिणाया ॥ इति
नमः ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥

हुं नमोऽगि॥ यश्चिम (गो) मय
 हुं कालं सधा जानाय ॥
 हुं मीधदाया ॥ डलन ॥ मंदा
 हुं कीर्तवा मदवाय नम ॥
 गायत्री ॥ मध्या कीर्तवा ॥ हुं ड
 कं र्व्यं नोय ॥ हुं आ वा य
 आ (गुलितं) ॥ मय ॥ हुं नम
 प्रवा ॥ हुं सधया नि आ ला
 हुं ॥ हुं अनय ह्वनि ॥ यूकन
 गायत्री आ ॥ १०८ ॥ विसृज
 कृत्वा ॥ नक मयि राग ॥
 हुं ॥ वाव गो ॥ नकलिंग रा
 गा ॥ हुं गिव नामा गि ॥ नकी
 जमान राग ॥ हुं वा वन स
 मि ॥ ३ ॥ आ वमनी ॥ रुनि
 यग वा साधन विधि ॥

जगत्सुमिसाधनी ॥ यद्गुण
 यद्गुणं ज्ञानस्वप्नं हृदी त्वा ॥
 उद्गुणं यद्गुणं ॥ उद्गुणं
 उद्गुणं यद्गुणं ॥ यद्गुणं
 उद्गुणं यद्गुणं ॥ यद्गुणं
 उद्गुणं यद्गुणं ॥ यद्गुणं

जिंवनं ॥ ३ ॥ उं कं अमुमनीवी क
नं ॥ २ ॥ उं कं वायं कं नाठ
नी ॥ ३ ॥ उं कं अमुमनीवी खनन
॥ ४ ॥ उं कं अमुमनीवी वावाया
॥ ५ ॥ उं कं ददयाय ॥ पूवणी ॥
६ ॥ उं कं ददयन ॥ समीक व
णी ॥ ७ ॥ उं कं कववाय ॥
जिंवनं ॥ ८ ॥ उं कं अमुमनीवी
कृष्ण ॥ ९ ॥ उं कं कववमनी
॥ लयनी ॥ १० ॥ उं कं ननुम
॥ मीजन ॥ ११ ॥ कृष्णयुष्म
॥ १२ ॥ उं कं सान्निकाय ॥ म
॥ १३ ॥ उं कं सान्नि ॥ पूवणी ॥
उं कं विद्याय ॥ दक्षिण ॥
उं कं ददियाय ॥ यधिम ॥
१४ ॥ उं कं इवृत्त ॥ उरुव ॥
१५ ॥ उं कं कववमनीवी ॥
उं कं सान्नि ॥ कृष्णदकन
जिंवनं ॥ १६ ॥ उं कं लंपिधी
॥ उं सान्नि ॥ यिधिवा ॥ १७ ॥
उं कं नथाय ॥ रथ ॥ उं कं
वदी ॥ वदी ॥ १८ ॥

उं कं कववमनीवी ॥ उं कं म
॥ मइलि ॥ यवमवान नृकन ॥
१९ ॥ उं कं अमुमनीवी ॥ अघ
यादादकन सिंवा ॥ २० ॥
दिअसादकन सिंवा ॥
दक्षिण वीदि ॥ उरुव लाजा ॥
म ॥ वदनी ॥ पूजन ॥ उं कं
सान्नि काय अमुमनीवी ॥
उं वीरुयधम ॥ उं कं पूधि
कायल मी मूरुथ ॥ उं स्व
मिन ॥ उं कं सवा वि
धि विना सायवका मूरुथ ॥
उं वदयलान ॥ वीदिलाजा
कवन ॥ उं कं कं वाहादि
यतयवका ॥ २१ ॥ उं कं वृत्त
मूर्ति ॥ यासादपूजन ॥
उं कं शान्ति ॥ अघयाय ॥
हीत्वा मूलकल सायना ॥
उं कं अमुमनीवी ॥ नाकन
यय ॥ उं कं वायुययनि ॥
मूलकल सता ॥ २२ ॥

ग प्रवृत्तः ॥ ध्यानः ॥
उ नमः सरस्वती ॥ हृदि
मिसाधनी ॥

गंगा गंगा दक्षकलसप्रज्जनी
उं हं मीमर्गं ॥ संध्यादकन
कलसप्रज्जनी ॥ वाक् ॥ उं स
मिमु ॥ मूलकलसविष
योगनप्रज्जनी ॥ आसादि च

लासप्रज्जनी ॥ कवकाङ्ग ॥
उं को वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ उं को विष्णु
व ॥ उं को ब्रह्मा ॥ उं को ईश्वरः ॥
ध्याय ॥ उं को सदाशिवः ॥ य
उं सरः अर्धाविष्णो ॥ उं श्रीं शंकर
मूलमर्चयिष्ये ॥ ज्ञानं य
माणा ॥ बलाययी ॥ ० ॥

कलसप्रज्जनी ॥ हवसकि क
लस ॥ लिव गिवकलस ॥
अविच्छिन्नधामार्थ ॥ उं वद
हनी ॥ मूलमर्चय ॥ उं श्रीं शंकर
॥ दया ललादि ॥ उं श्रीं शंकर
॥ को हृदयनता ॥ पुनः ॥

मरी ॥ ॥ नमो न्यासक
यवकाङ्ग ॥ मूलमर्चयिष्ये
जलि ॥ उं वदकाङ्ग ॥ उं
देविष्णु ॥ उं नमः सरस्वती ॥
उं द्यावकाङ्ग ॥ उं श्रीं शंकर ॥
उं मदाङ्ग ॥ श्रीं ॥ ज्ञानं य ॥ न्यास ॥
बलाययी ॥ आदि ॥ हृदि ॥
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

गंगा प्रवृत्तकलसप्रज्जनी ॥
उं को प्रवृत्तकलसप्रज्जनी ॥ उं को
वकाङ्ग ॥ उं को ब्रह्मा ॥
॥ उं न त्वां यामि ॥ यथि
॥ उं को शानाधृतिवी ॥
उं को यतुयक् ॥ उं को द
मदवी ॥ उं को क्वादिगुह्य ॥
नैदिननमः ॥ ध्यान ॥ उं को
युवाङ्गा जटाधारी वक्का
आदिवार्क ॥ साकुमाला
विष्णु ॥ नदीसा ॥ उं को
लदा ॥ उं उद्यनसुनवागि

[illegible]

धवलं श्रीगुरुवरं लभकं वा
 धर्मं वा उरुमभिवन्द्यते ॥ चंद
 नादिवलि ॥ यतिरु ॥ उमना
 अति ॥ समा ॥ नागं यासात्म
 कीनित्यं दलनाशनद्रावन्तः
 निमगाश्च विख्याता नागं राक्ष
 नमासु ॥ अथ नक्षत्रादि ॥
 रुद्रि यं धिमं कलं ॥ ३॥

[illegible]

॥ पञ्चदशसूक्तम् ॥ ॥ ध्यानम् ॥
 ॥ वक्रानयसमादृतं नीलास्थल
 ॥ दक्षयज्ञा ॥ कृद्यानयानीनादिव
 ॥ दिने कृद्य क्रमश्च वी ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ वीदनादिबलि ॥ ॥ यद्विष्णु ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ नाम्नात्मना ॥ ॥ सर्व्वयुगादिय
 ॥ ध्रुवनेमत्यानियमिग ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कनो वा यथा कालं चैव ॥
 गासादिनां च या नादृथिवि ॥
 उ दानादवी ॥ इत्थानिष्टगा ॥
 उ दानादवी ॥ इत्थानिष्टगा ॥
 धर्मरुस्य ॥ ध्यान ॥
 आसीत् इति ॥ आर्यविला ॥
 मन्त्र ॥ धर्मिनी ॥ या ॥ इति ॥
 कौर्ण ॥ इति ॥ समाप्त ॥
 उ दानादवी ॥ इति ॥
 धर्मरुस्य ॥ ध्यान ॥
 आसीत् इति ॥ आर्यविला ॥
 मन्त्र ॥ धर्मिनी ॥ या ॥ इति ॥
 कौर्ण ॥ इति ॥ समाप्त ॥

कर्म। एषां सानकालसाधने न
 शासादि॥ उसांनाय विवि॥
 उसांनाय विवि॥ उसांनाय विवि॥
 उसांनाय विवि॥ उसांनाय विवि॥
 यतिगुलरुसा॥ यतिगुलरुसा॥
 नां। एषां सानकालसाधने न
 विवि॥ यतिगुलरुसा॥ यतिगुलरुसा॥
 यतिगुलरुसा॥ यतिगुलरुसा॥
 नां। एषां सानकालसाधने न
 विवि॥ यतिगुलरुसा॥ यतिगुलरुसा॥
 यतिगुलरुसा॥ यतिगुलरुसा॥
 नां। एषां सानकालसाधने न
 विवि॥ यतिगुलरुसा॥ यतिगुलरुसा॥
 यतिगुलरुसा॥ यतिगुलरुसा॥

कमा शुद्ध कलसा वै ॥
 आसा ॥ उ आ ना यि यि ॥
 द्वायादवि ॥ उ वल्ला व धृंग ॥
 उ कौ कू शुद्ध द्वि प्रय साया ना ॥
 अर्नरं युलुनी का द रु ना द ॥
 गमी युं न शा वि यु डा म अमी का
 इ क र्म मी र वि वि न य म ना
 उ म वि य द्या ॥ व द न न द ॥ वल्लि

यतिस्तु॥ उ मनाश्च वि॥ साधनं॥
 यनगादियत्त दत्तं अर्नतं नमः
 विद्युमि॥ याता लं नमः नित्यं
 अर्नतं यनमा अर्नतं॥ अर्नतं
 दि॥ २२ मि अर्नतं काल साधनं

नमोऽहं वरुणा सावनी ॥ न्यासा ॥
 उं सा नमो वरुणा ॥ उं द्या यो देवि ॥
 उं ब्रह्मा विष्णोर्गो ॥ उं सोऽहं उं हं
 द्विपुत्रय वरुणा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यीर्ष्य कुरुवा ॥ उं वरुणा यज्ञनी ॥
 देवनादि वलि ॥ युक्तिषु ॥ उं
 मनः प्राप्ति ॥ स्मृता ॥ यज्ञाया नि
 कुरु मूर्ति मद्देवान निर्वर्धनी ॥
 शुद्धि कर्त्तुं नमो नित्यं नमो व
 कुरुनाम् ॥ नमो गंधादिना ॥
 उं नमोऽहं वरुणा सावनी ॥

नमो मधुसूदन ॥ उं क्रीं क्रीं
 वा स्वा विष्णवे ॥ वृक्ष न ॥
 उं वृक्ष आशान ॥ उं क्रीं क्रीं
 यद ॥ जिह्व ॥ उं क्रीं क्रीं
 यद ॥ यन्नव ॥ उं अं अं अं
 यद ॥ उं क्रीं क्रीं यद ॥

[illegible][illegible]

नमो नमो मयि मयि कल
॥ आदिरुनादि ॥ आनि ॥
कुमावप्रेसीदहा अकय सुक
भायण ॥ सर्वसाधु विमल सु
अवध्या नगु मृगा ॥ उ ॥ गुनु
वद ॥ उ ॥ असा ॥ वदनादि
वलि ॥ सु ॥ दानादि ॥
अमीनवि नवाद्य ॥ गुनु
नमस्तु ॥ असा ॥ गुनि ॥
अमर्ग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नमस्तु ॥ असा ॥ गुनि ॥
साधु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दाया ॥ सर्वलक्षणसंज्ञ
नमस्तु ॥ असा ॥ गुनि ॥
असा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
उ ॥ वसुधमा ॥ वदनादि ॥
सा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
लिकायान्ताविनी ॥ विधि ॥
वर्गद्वी ॥ असा ॥ गुनि ॥
अमर्ग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नमस्तु ॥ असा ॥ गुनि ॥
कल ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
विमर्ग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

[illegible]

येथी वीरगिरी गंगामग्नं प्रजापतिं कृष्णं दक्षं धर्ममधुं यमं ॥ विष्णुं वने वहाद्यं
 यडावदको नायं माधव कृष्णं शयणं मुनिं गव ॥ विंगला कलादिगरी वक्रं व
 द्धनं मधुं ॥ अस्मान्नि वनं हिनस्थानं तस्यागवः ॥ यमं यथा यथा ॥ १० ॥ कुरुं वदो म
 वदुगं यमिनि यमि ॥ शत्रुवः यमं रुयं रुद्रं अर्चयुं कुरुं सा ॥ कयिलजटी सव
 रुद्रवामे यथैकं दवगा ववृणं चरवसा ॥ यो मम कुरुं शत्रुं द्रुणि ॥ यावदादिस
 गत्यमि यावज्जानि र्धमा यो वदामः ॥ ववृणं द्रुणि यावद्री वलया सरुं यमं क्रोन
 द्रुकां यमं रुनवा कान्ती वणि ॥ यमं वा मयं का वा पाणि यं क्रो वणि सजी वणि ॥ यमं
 मां ॥ यं द्रुं नदं ॥ यो नत्वं विं वलं न यमं वी त्वं रुद्रं द्रुं यमं द्रुं ॥ ११ ॥

[illegible][illegible]

ॐ प्रत्युर्मेनेः॥ सीतेः सीतानि दीगर्भ सुवृत्तिना तु द्विद्यया धारया त दानेः धेयां त
 ॥ सुप्रसादय मोक्षुताः सद्यः॥ काल सीतनद सिता जलमूदः सीतु यज्ञाः दुःप्रदा
 ॥ अमाद्वजवृद्धि वाः प्रव सुदं द्रोष्ठी यमादाः सदा॥ दाक्षः गाङ्ग नत्र शक्तिस्तो व
 ॥ मया इः स्व मुभयः यु रावान् । वृणा वि कर्म ह कुम मया ध रित कल्प भव मया का म
 ॥ सीता ॥ लीला गिः सवै लुगानां सिद्धि रीत व ग विव न अ नृणां नृषु ह गानां दृष्टा व सप्त
 ॥ अरुत ॥ इमे नृणां सावाका गेन्य पादि दुर्लभ म॥ अरुगी वायु दीनी वेग ग ह व द
 ॥ अमन ॥ अरु म अरु अरु न कि याही न ग द हि म पि न स र्वे कलु म ह सिद्धि वृत्ति ॥ ध
 ॥ वरगले ॥ अरु न न ज्ञान न वापि अन्मया मरुगी दुर्ग ॥ का नु मरुहि नि द व ॥ क मा

अमेरुगायत्रे ॥ शिवसंस्तुतवर्द्धनादिद्वितीययोगो हि मातङ्ग
मन्त्रश्चैव प्रथमः सर्वदा नित्यं कथायादवच्छृण्वीवाक्कारुर्न
शिरसा ध्यायेत् ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

संलग्न ७८ का लिख पुदी १७ ना १८० निलेना धवपी गधर का हास्तिगवन पात्राय दीर्घा
को लवना ऊं न या हा हा न शला पु न मं न रि कूं मं न हा गण या हा हा ॥ ॥ ॥

१२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०
२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०
४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०
६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०
८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९१००

[illegible]

गङ्गा वमालक (मुद्राङ्क) मी
नरक दयसननया सनानिद
वर्थाऊऊका यवामृन् यवयु
यखीदक २ काशयउ श्रीमान
का शगिभि स्थान धुनि यिन
वमालोहोत यागवागि द्वा
यदीउ ऊऊका धर्मोदन याद
धर्मोहमालका वसय ससा
दका भीधेदका रु दन वास
देवर्म द्वायऊऊका ॥ यिनाय
वेधेउ धिउरु रु यथाहन
उऊऊ यिमायकायया ॥
वि वग वि वि वि वि वि
२। ऊऊऊ ऊऊऊऊ ॥
देसलल हलठि या धरुऊ
कम मि वि कि गि क व अठि
वि वि गि क व मूरु ऊऊऊ ॥
ऊऊऊ ऊऊऊ ऊऊऊ ॥
२। ऊऊऊ गि व व ऊऊऊ ऊलनन
ऊनीदय सि वि य व मूरु
ना सय व वीद सान्ना ना ॥

वैष्णवस्यै नमः

कृति
नकुलकि
ब्राह्मि
नकुयना

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

वृष
पान
नकुयना

धदिस

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

मृग
मृग
मृग

यागवर्गवाजसम






यमशु॥ यम॥
 उमसि यास न










यमशु॥ यम॥
 यमशु॥ यम॥





